करवा चौथ की परम्परा और उसके शास्त्रीय सन्दर्भ

- लेखक : डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू
- तारीख : October 29, 2026

भारतीय समाज में विभिन्न महत्वपूर्ण तिथियों और अवसरों पर व्रत रखने की परंपरा रही है। महिलाएं हमारी संस्कृति-परंपरा, पर्वों और लोक-आस्था की प्रमुख संवाहक हैं। जितने सहज, समर्पित और संवेदनशील भाव से स्त्रियां इन लोक-परंपराओं का निर्वहन व संरक्षण करती हैं, वह भारतीय समाज की एक अनुपम विशेषता है। इन्हीं पम्पराओं में 'करक चतुर्थी' का स्थान अत्यंत विशिष्ट है।

प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी विघ्नहर्ता गणेश जी को समर्पित होती है, जिसे 'संकट चतुर्थी' या 'संकष्टी' के रूप में मनाया जाता है। संस्कृत में 'संकष्टी' का शाब्दिक अर्थ संकटों और कष्टों का हरण करने वाली तिथि है। इस दिन श्रद्धालु उपवास रखकर रात्रि में चंद्रोदय के समय भगवान गणेश की पूजा करते हैं और चंद्रमा को अर्घ्य देकर व्रत का पारण करते हैं। कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की यह चतुर्थी विशेष रूप से 'चंद्रोदय-व्यापिनी' होने के कारण गणेश जी और चंद्र देव की संयुक्त आराधना का पर्व बन जाती है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की इसी चतुर्थी तिथि को मनाया जाने वाला करक चतुर्थी व्रत अखंड सौभाग्य और परस्पर समर्पण का प्रतीक है। 'करक' का शाब्दिक अर्थ टोंटीदार छोटा मिट्टी का पात्र यानी 'करवा' होता है। इस दिन सुहागिन महिलाएं अपने पति की दीर्घायु, आरोग्य और सुखद दांपत्य जीवन की मंगलकामना के साथ निर्जला उपवास रखती हैं। संध्या बेला में सामूहिक पूजन, करवा फेरने की रस्म और रात्रि में इसी करवे के जल व दूध से चंद्रमा को अर्घ्य देकर व्रत का पारण किया जाता है।

करवा: मिट्टी का टोंटीदार पात्र

वामन पुराण में इस व्रत का उल्लेख बताया जाता है, लेकिन पुराण के वर्तमान पाठ में इसका विवरण नहीं मिलता। वामन के नाम से ही अन्य निबन्धकारों और परवर्ती ग्रन्थकारों ने इसे उद्धृत किया है। निर्णयसिन्धु, व्रतार्क, व्रतराज, स्मृतिकौस्तुभ और पुरुषार्थ चिन्तामणि आदि ग्रन्थों में इसके उदाहरण मिलते हैं। वामन पुराण की रचना में पंजाब की पृष्ठभूमि का प्रभाव भी दिखाई देता है। पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में इसे 'कंगन चौथ', 'सहेली चौथ' अथवा 'वीरवती व्रत' के रूप में भी जाना जाता रहा है। कालान्तर में अपभ्रंश बोलियों के प्रभाव से 'करक' शब्द 'करवा' बना और जनमानस में यह पर्व 'करवा चौथ' के नाम से प्रतिष्ठित हुआ।

करवा चौथ का पर्व

यह भी रोचक है कि पंजाब के प्रेमाख्यानों में मिट्टी के पात्रों का उल्लेख मिलता है। करवा चौथ की परम्परा भी इसी क्षेत्र से विशेष रूप से जुड़ी रही है। पूर्वकाल में बरगद के वृक्ष के नीचे शिव, गणेश और स्कन्द के साथ गौरी के चित्र की विविध उपचारों से पूजा की जाती थी। इसके बाद विप्रों को करकों का दान किया जाता और चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जाता था।

करक को गणेशजी का स्वरूप भी माना जाता है। सोमरस को छन्नी से छानने के वैदिक विधान का अनुकरण चन्द्रमा, अर्थात सोम, को छन्नी से देखने की परम्परा में देखा जाता है। शरद ऋतु में प्राप्त इषीक, अर्थात सींकों, का उपयोग भी अर्घ्य प्रदान करने में होता है।

हरिवंश पुराण के विष्णुपर्व, अध्याय 79 में 'करक' व्रत की जिस प्रक्रिया का वर्णन मिलता है, उससे करवा चौथ की वर्तमान विधि का साम्य दिखाई देता है। परम्परा से यह व्रत कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को मनाया जाता रहा है। इसी प्रकार चार दिन बाद अष्टमी को 'अहोई' की परम्परा आती है। इन दोनों में कुलाचार और स्थानीय परम्पराओं का भेद भी दिखाई देता है।

प्रदीप

श्री हरिवंश पुराण

सरल
हिन्दी
भाषा

सन्तान गोपाल स्तोत्र सहित

हरिवंश पुराण

करवा चौथ के साथ जुड़ी एक कथा मांधाता से सम्बन्धित बताई जाती है। कथा के अनुसार अर्जुन जब इन्द्रलोक के पहाड़ी प्रदेश में तप करने गए, तब द्रौपदी चिन्तित हुईं। इस पर श्रीकृष्ण ने उन्हें इस व्रत के विषय में बताया और इन्द्रप्रस्थपुर की लीलावती की कथा कही:

वेदधर्मा द्विजस्तत्र वसन्देशे विदांवर।
पत्नी तस्यैव विप्रस्य नाम्नालीलावती शुभा॥
(व्रतार्क, पृष्ठ 122, श्लोक 10)

इसके साथ पति की दीर्घायु का भाव भी जुड़ा हुआ मिलता है:

करकं क्षीर सम्पूर्णं तोयपूर्णमथापि वा।
ददामि रत्नसंयुक्त चिरंजीवतु मे पतिः॥

नारद पुराण के अध्याय 113 में भी करक व्रत का प्रसंग मिलता है। वहाँ इस व्रत को सौभाग्यदायक बताया गया है और गणाधीश की पूजा करने का निर्देश मिलता है। चन्द्रोदय के बाद अर्घ्य देने और इसे 16 वर्ष तक करने का विधान भी बताया गया है:

चतुर्थ्यां कार्तिके कृष्णे करकाख्यं व्रतं स्मृतम् ॥ ४३ ॥
स्त्रीणामेवाधिकारोऽत्र तद्विधानमुदीर्यते ॥
पूजयेच्च गणाधीशं स्नाता स्त्रीसमलंकृता ॥ ४४ ॥
तदग्रे पूर्णपक्वान्नं विन्यसेत्करकान्दश ॥
समर्प्य देवदेवाय भक्त्या प्रयतमानसा ॥ ४५ ॥
देवो मे प्रीयतामेवमुच्चार्य्याथ समर्पयेत् ॥
सुवासिनीभ्यो विप्रेभ्यो यथाकामं च सादरम् ॥ ४६ ॥
ततश्चंद्रोदये रात्रौ दत्त्वार्घं विधिपूर्वकम् ॥
भुञ्जीत मिष्टमन्नं च व्रतस्य परिपूर्तये ॥ ४७ ॥
यद्वा क्षीरिण करकं पूर्णं तोयेन वा मुने ॥
सपूगाक्षतरत्नाढ्यं द्विजाय प्रतिपादयेत् ॥ ४८ ॥
एतत्कृत्वा व्रतं नारी षोडशद्वादशाब्दकम् ॥
उपायनं विधायाथ व्रतमेतद्विसर्जयेत् ॥ ४९ ॥
यावज्जीवं तु वा नार्या कार्य्यं सौभाग्यवांछया ॥
व्रतेनानेन सदृशं स्त्रीणां सौभाग्यदायकम् ॥ ५० ॥
विद्यते भुवनेष्वन्यत्तस्मान्नित्यमिति स्थितिः ॥

॥ श्रीहरिः ॥

1183

संक्षिप्त

नारदपुराण

(सचित्र, मोटा टाइप) केवल हिन्दी

गीताप्रेस, गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

नारद पुराण

भारतीय व्रत परम्परा में पति की दीर्घायु, सौभाग्य और परिवार की मंगलकामना से जुड़े अनेक अनुष्ठान मिलते हैं। करक चतुर्थी का संकल्प भी इसी भाव से किया जाता है:

सौभाग्यपुत्र पौत्रादिस्थिर श्रीप्राप्तये
करक चतुर्थी व्रतं करिष्ये।

करवा चौथ के साथ श्रृंगार और प्रसाधन की परम्पराएँ भी जुड़ी हुई हैं। मेहंदी, चूड़ा, चूनर और अन्य सुहाग चिह्न इस व्रत के सामाजिक स्वरूप का हिस्सा बन गए हैं। भारतीय पर्व परम्पराओं की एक विशेषता यह भी है कि वे समय के साथ नए सामाजिक रूप ग्रहण करती रहती हैं, लेकिन उनके मूल में निहित समर्पण, मंगलकामना और पारिवारिक सम्बन्धों का भाव बना रहता है। करक चतुर्थी भी इसी निरन्तरता का एक उदाहरण है।

समय के साथ इस पर्व के स्वरूप में भी बदलाव आया है। आज केवल विवाहित महिलाएँ ही नहीं, बल्कि मंगनी हो चुकी युवतियाँ भी यह व्रत करने लगी हैं और कहीं-कहीं पुरुष भी इसमें सहभागिता निभाते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में इस पर्व को 'करक चतुर्थी' के नाम से किया जाता रहा है, लेकिन 'सुहाग', 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' और 'हम दिल दे चुके सनम' जैसी फिल्मों व धारावाहिकों ने इसके पारंपरिक लोक-स्वरूप को बदलकर आधुनिक जनजीवन में एक ग्लैमरस और व्यापक पहचान दिलाई है।

लेख-
डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'
उदयपुर, राजस्थान